IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

साहित्य और सिनेमा में राम: एक अध्ययन

Dimple* (Research Scholar)
Dr. Ravinder Dhillon (Associate Professor)**

Department of Journalism and Mass Communication, Chaudhary Devi Lal University, Sirsa, Haryana

शोध सारांश:

'रा' का अर्थ है प्रकाश। 'म' का अर्थ है मैं। यानी राम का अर्थ है 'मेरे भीतर का प्रकाश', या 'मेरे हृदय का प्रकाश'। जो आपके भीतर चमकता है, वह राम हैं। जो अस्तित्व के, सृष्टि के कण-कण में दीप्तिमान है, वह राम हैं। भगवान राम अपनी सत्यवादिता के लिए जाने जाते हैं, उन्हें सभी मानवीय व्यवहारों में परिपूर्ण और एक आदर्श राजा माना जाता है।[1] राम भारतीय परम्परा में एक विशिष्ट स्थान रखतें हैं। वे हमारे सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक जीवन के ऐसे पुरुष हैं जो अवतार के साथ ही मानवीय स्वरूप में भी अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं चाहे वह वाल्मीकि रचित रामायण हो , तुलसीदास रचित रामचरितमानस हो अथवा रामायण की तर्ज पर अन्य भाषाओँ में लिखी गयी विभिन्न रचनाओं उन सभी में मानवता , नैतिकता , कर्तव्यबोध एवं पारिवारिक स्नेह समाहित है। राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं क्योंकि उनके व्यक्तित्व में स्त्री के सम्मान का सर्वोत्तम सद्गुण सर्वोच्च आभा से प्रकाशित होता है। उनका जीवन पितृभक्ति, भ्रातृप्रेम, मित्रता, विनम्रता, शालीनता , त्याग और प्राणिमात्र के प्रति प्रेम का प्रतिमान है। पौराणिक कथाओं से लेकर सिनेमाई पर्दे तक राम के चरित्र को अलग अलग रूप में प्रस्तुत किया गया है अतः इस स्थिति में शोध अध्ययन के लिए "साहित्य और सिनेमा में राम: एक अध्ययन" विषय को शोध समस्या के तौर पर चुना गया है। शोध विषय से संबधित लेखों , पुस्तकों , समाचारपत्रों , पत्रिकाओं, शोध पत्रों एवं फिल्मों का अध्ययन किया गया हैं। शोध उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए यह जानने का प्रयास किया गया है कि साहित्य और सिनेमा में राम का चरित्र किस प्रकार प्रस्तुत किया गया है। साहित्य एवं सिनेमा की पृष्ठभूमि पर राम किस प्रकार आध्यात्मिक एवं सामाजिक संदेश दे रहे हैं इसका अध्ययन करना। शोध उद्देश्यों की पूर्ति के लिए रामायण सम्बन्धी विभिन्न साहित्य, आलेखों और फिल्मो का अंतर्वस्तु विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द: राम , चरित्र , जीवन मूल्य , समाज ,साहित्य , सिनेमा , रामायण , धर्म ,कला , भाषा , सांस्कृतिक प्रभाव।

राम: एक परिचय

एहि महँ रघुपति नाम उदारा।
अति पावन पुरान श्रुति सारा॥
मंगल भवन अमंगल हारी।
उमा सहित जेहि जपत पुरारी॥

अर्थात् रामचरितमानस में श्री रघुनाथजी का उदार नाम है जो पवित्र है, वेद-पुराणों का सार है, मंगल करने वाला और अमंगल को हरने वाला है, जिसे पार्वती जी सहित स्वयं भगवान शिव सदा जपते हैं।

इस भरत भूमि पर राम अनेक हुए हैं परन्तु तीन युगों के तीन राम श्रेष्ठता के शीर्ष पर विराजमान हैं- क्रमानुसार , सतयुग के रेणुकापुत्र परशुराम , त्रेतायुग के कौशल्यानंदन रामचंद्र और द्वापरयुग रोहिणीसुत बलराम। [2]

[1] (18 □□□□□ 2024, □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□, □□□□□ □□□□□□ 2)

2 (□□□□□□ 2024, □□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□ ,□□□□□ □□□□□□ 20)

भारतीय परिवारों में जहां जनमानस की सुबह का आरम्भ राम -राम कहकर होता है वहीं परम्पराओं के अनुसार 'राम नाम सत्य' के उद्घोष के साथ जीवन का अंत भी इसी नाम के साथ होता है। एक विदेशी विद्वान का कहना है कि यदि संपूर्ण एशिया महाद्वीप की अपनी कहने की कोई कथा है तो वह राम कथा है। इसी के ही विविध रूप एशिया के देशों में उपलब्ध होते हैं, विविधता इतनी कि एक-एक देश में भी चार-चार रूप। लाओस एक छोटा सा देश है, उसमें हैं उसके चार रूप। केवल रूप ही इसके अलग-अलग नहीं हैं, नाम भी अलग-अलग हैं। म्यन्मार (पुराना नाम बर्मा) में इसे रामवत्थु और राम थग्यन् कहा जाता है। थाईलैंड में इसे रामकियन (संस्कृत में रामकीर्ति, कियन कीर्ति का ही परिवर्तित रूप है।), कम्बोडिया में रामकरे , मलेशिया में हिकायत (कथा) सरी (श्री) राम, इण्डोनेशिया में राम ककविन (राम काव्य), फिलीपींस में महाराजा लावण (रावण), लाओस में फ लक् फ लाम (उच्चारण में फलक् फलाम)। जहाँ तक मुख्य (बीज) कथा का प्रश्न है वह सभी में एक समान है। संस्कृत में एक ही श्लोक में वह बीज कथा इस रूप में प्रस्तुत की गई है-

आदौ रामतपोवनादिगमनं हत्वा मृग काञ्चनं

वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसम्भाषणम् ।

वाली निर्दलनं समुद्रतरणं लङ्कापुरीदाहनं

पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहननमेतद्धि रामायणम् ।।

यह श्लोक संस्कृत संप्रदाय में एक श्लोकी रामायण के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें कहा गया है कि- पहले राम का (विश्वामित्र के साथ) तपोवन आदि में जाना, स्वर्णमृग को मारकर (मारना), सीता का हरण, जटायु की मृत्यु, सुग्रीव के साथ बातचीत (सन्धि), बाली वध, समुद्रतरण, लंका दहन, और अंत में रावण और कुंभकर्ण का हनन इतनी भर ही रामायण है।[3]
वहीं कवियों, कहानीकारों, उपन्यासकारों एवं फिल्मकारों ने अपनी सूझबूझ के मुताबिक इस महाकाव्य का अलग अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

साहित्य समीक्षा:

रेणुधार प्रधान (2002), इस शोध में यह निष्कर्ष सामने आता है कि वाल्मीकि तथा तुलसी के प्रमुख पात्रों के मनोवैज्ञानिक अध्ययन से यह स्पष्ट हो गया है दोनों के ही पात्रों में असमानताओं की अपेक्षा समानता अधिक रही है। रामकथा के माध्यम से दोनों ने युगानुरूप लोकमंगल की बात कही है, जिसमें पात्रों की अहम् भूमिका है। इस कथा के नायक राम का व्यक्तित्व संवेदी तथा सत्वगुण-युक्त है। वाल्मीकि ने राम के चरित्रवर्णन (वाल्मीकि-नारद संवाद) में कोई भी एक ऐसा गुण नहीं छोड़ा है जिसकी आवश्यकता एक सत्पुरूष को होती है। वाल्मीकि ने राम में जितने गुणों को ढाला है, एक ही व्यक्ति में इतने सारे सद्गुण, वर्तमान समय में कल्पना से परे है। वाल्मीकि ने ये भी स्पष्ट कर दिया है कि राम अपने समय के सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति थे। वाल्मीकि, सीता को 'देवमायेव निर्मिता' कहकर राम के साथ सीता का विवाह प्रत्यक्ष रूप से न सही, किंतु परोक्ष रूप से राम की अलौकिकता को सिद्ध करता है । देवमाया से उत्पन्न कन्या का विवाह किसी साधारण शील-गुण से संपन्न, सदाचारी राजा से नहीं हो सकता। इसके अतिरिक्त स्वयं ब्रह्मा का वाल्मीकि से राम पर काव्य लिखने को कहना भी उनकी अलौकिकता को प्रतिपादित करता है। सम्भवतः काव्य रचना के पीछे कवि का यह भी लक्ष्य रहा है कि मनुष्य जाति के समक्ष एक ऐसा व्यक्तित्व प्रस्तुत किया जाये जिसकी अभिवृत्तियों से प्रभावित होकर कुछ अंश तक मानव अपनी भावनाओं का समायोजन की चेष्टा करे। राम की सवृत्तियाँ संपूर्ण कथा में संक्रमणशील रही हैं। राम जहाँ जहाँ जाते हैं प्रत्येक स्थान पर उनके स्वभाव से लोग प्रभावित होते हैं और उनकी महत्ता की सराहना भी करते हैं।
तुलसी ने राम के चरित्र में अलौकिकता के स्वरूप को देखते हैं। वाल्मीकि के राम, सीता हरण के अवसर पर विकल होकर बिलखते हैं किंतु तुलसी के राम का विरह मर्यादित रहा है। ऐसी स्थिति वाल्मीकि तथा तुलसी दोनों के राम में हम 'लक्ष्मण शक्ति भेद' के अवसर पर भी देखते हैं। तुलसी ने राम को ईश्वरिय रूप प्रदान करने में जो तर्क रखा है कि धर्म की रक्षा करने के लिए ईश्वर अवतार लेते हैं, यह कुछ अंश तक वाल्मीकि के राम में भी परिलक्षित होता है। वाल्मीकि के राम ने अपने जीवनकाल में जिन जिन कार्यों को संपादित किया है, तुलसी के राम भी उन्हीं कार्य को करते हैं।दोनों ही कवियों ने अपने काव्य में युग की परिस्थितियों के अनुरूप कथा, दर्शन एवं लोक व्यवहार का वर्णन किया है। तुलसी ने वाल्मीकि के रामकथा को अपना आधार तो बनाया है किंतु उसमें कुछ परिवर्तन के साथ। जिसमें उनकी मौलिकता का परिचय मिलता है। दोनों ने ही वेद-वर्णित व्यवहार, प्रतिमानों, मूल्यों एवं आस्थाओं पर प्रकाश डाला है, जो आर्य-संस्कृति के आधारशीला हैं।

[3] (□□ □□□□□ □□□□□ , □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ और□□□□□□□□□□(□□□□□□□) एक□□□□□□□□□ □□□□□□, □□□□□ □□□□□□ 9)

प्रियंका शर्मा (2009), इस शोध के निष्कर्ष में कहा गया है कि भारत ऋषिमुनियों और साधु सन्तों का देश है जहां हर युग और हर काल में अनेक युगपुरूषों ने जन्म लेकर समस्त मानव जाति को प्रेम, एकता, सहयोग, सद्भाव, दया, सहिष्णुता, वसुधैव कुटुम्बकम् विश्व शान्ति और मानवता का सदुपदेश दिया इसके साथ ही समाज को आदर्श समाज और मानव को आदर्श बनाने के लिए सर्वोत्कृष्ट उद्देश्य को लेकर धर्म गन्थों की रचना की इन धर्म ग्रन्थो में वेद, पुराण, उपनिषद् और वाल्मीकि रामायण आदि जैसे धर्मग्रन्थ उल्लेखनीय हैं वाल्मीकि रामायण मानवीय संवेदना की प्रथम अभिव्यक्ति कही जा सकती है। महर्षि वाल्मीकि ने अपने कालजयी ग्रन्थ 'रामायण' में वर्णित आख्यानों के माध्यम से प्रत्येक वर्ग के पात्रों का समावेश किया है इन पात्रों का जीवन चरित अपनी विलक्षण विशेषताओं के कारण अनुकरणीय है। वशिष्ठ विश्वामित्र, अगस्त्य आदि ब्रह्म ऋषियों की लोक कल्याणकारिता, दशरथ की प्रतिज्ञा, श्रीराम की लोक रंजक मर्यादा, सीता का पातिव्रत्य, हनुमान् की प्रभु सेवा के साथ-साथ श्रीराम के अनुज लक्ष्मण का भ्रातृप्रेम, जितेन्द्रियता, वीरता आदि अनुकरणीय विशेषताओं के हम सभी भारतवासी बड़ी श्रद्धा से स्मरण किया करते हैं। रामायण को भारतीय सभ्यता ने अपनी अभिव्यक्ति के लिए प्रधान साधन बना रखा है और भारतीय सभ्यता की प्रतिष्ठा है 'गृहस्थाश्रम' अतः यदि इस गृहस्थ धर्म की पूर्ण अभिव्यक्ति के लिए आदिकवि ने इस महाकाव्य का प्रणयन किया तो आश्चर्य क्या है रामायण तो भारतीय सभ्यता का प्रतीक बना हुआ है। महर्षि वाल्मीकि एक ऐसे ही ग्रन्थकार हैं वे भारत वर्ष के ही नहीं सारे संसार के आदिकवि हैं उनका अद्भुत महाकाव्य साहित्याकाश का वह निर्मल चन्द्रमा है, जो अपनी स्निग्ध छटा से मानव मात्र के अन्तः करण को शीतल कर देता है तथा जिसके दिव्य आलोक में मानव जीवन के सामाजिक, राजनीतिक और पारिवारिक सभी प्रकार के आदर्श अत्यन्त परिष्कृत रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। महाकवि ने मानव जीवन क्षेत्र के सभी पक्षों का विचार अपने काव्य में प्रस्तुत किया है जीवन का कोई भी पक्ष इनकी लेखनी से अछूता नहीं रहा इन्होंने अपने काव्य में समाज, नारीत्व, पुरुषत्व के साथ-साथ मित्रता, प्रेम, उदारता, सदाचार, सज्जनता, सुख-दुख आदि विषयों से सम्बन्धित विचार प्रस्तुत किये हैं ।

पूजा कुमारी (2021), इस शोध पत्र में निष्कर्ष के तौर पर बताया गया है कि महाकाव्य रामायण भारत की चेतना में केंद्रीय स्थान रखता है। 1987 में राष्ट्रीय दूरदर्शन पर पहली बार प्रसारित रामायण ने इस महाकाव्य को एक राष्ट्रीय क्लासिक बना दिया, जो जनता तक पहुंचा और अपार लोकप्रियता हासिल की। तब से रामायण धारावाहिक को एक ही कथानक के साथ कई बार पुन: प्रस्तुत किया गया है। हालाँकि, दर्शकों की अपेक्षाओं की अनूठी शैली और समकालीन सामाजिक-सांस्कृतिक माहौल ने इनमें दृश्य कथाकारों पर अपना प्रभाव डाला। इस शोध में, गुणात्मक सामग्री विश्लेषण की तकनीक का उपयोग करके टेलीविजन पर प्रसारित रामायण में पांच प्रमुख पात्रों के चरित्र-चित्रण का विश्लेषण किया गया है और मतभेदों और समानताओं की पहचान करने के लिए महाकाव्य धारावाहिकों के पात्रों की तुलना की गई है। निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि रामायण धारावाहिक के पात्र रीमेक के साथ शारीरिक उपस्थिति के स्तर पर बदल गए हैं, विशेष रूप से पोशाक, मेकअप और कास्टिंग में। पाठ्य रामायण के टेलीविज़न संस्करण ने सिनेमाई आदर्श राम और अन्य पात्रों के साथ अपनी तरह की रामायण बनाई जो समकालीन प्रासंगिकता की विशेषताएं रखती है। ऐसा लगता है कि निर्देशकों द्वारा इसे समय के साथ किसी भी अन्य दैनिक सोप ओपेरा की तरह माना जा रहा है,शायद टेलीविज़न रेटिंग्स और दर्शकों का जुड़ाव निर्माताओं को नए तत्व जोड़ने के लिए प्रेरित करता है। अगर समान तर्क पर देखा जाये तो यह काफी संभव प्रतीत होता है आने वाले 50-60 वर्षों या उससे अधिक के बाद महाकाव्य के ये दृश्यात्मक संस्करण यह पूरी तरह से एक नई दृश्य कल्पना में बदल सकता है।

डॉ प्रीति (2023), रामायण एक प्राचीन हिंदू महाकाव्य है जिसे सदियों से विभिन्न रूपों में दोहराया गया है ।यह इस शोध पत्र में मूल सहित रामायण के पांच अलग-अलग संस्करणों की व्याख्या करता है वाल्मिकी रामायण, सरलीकृत तुलसीदास रामायण, महिलाओं की भूमिका पर जोर देते हुए अपनी विशिष्टता के साथ कंबन रामायण, आध्यात्मिक व्याख्या के साथ अध्यात्म रामायण और हिंदी भाषा की रामचरितमानस जो भगवान राम की भक्ति पर जोर देती है। प्रत्येक संस्करण की अपनी अद्वितीय विशेषताएं हैं , जैसे भाषा, चरित्र-चित्रण और कुछ घटनाओं पर ध्यान केंद्रित करना। वाल्मिकी रामायण अत्यधिक विस्तृत और जटिल कथा प्रदान करती है, जबकि तुलसीदास रामायण है आम जनता के लिए अधिक सुलभ है। कंबन रामायण भगवान राम की कहानी पर एक अद्वितीय परिप्रेक्ष्य प्रदान करती है और अध्यात्म रामायण उन शिक्षाओं और पाठों पर जोर देती है जिनका कहानी से चयन किया गया है। अंत में रामचरितमानस , महाकाव्य का एक और पुनर्कथन है।

जिज्ञासा सहाय ,इंडिया डॉट कॉम (2024), प्रसिद्ध लेखक देवदत्त पटनायक एक ऐसे लेखक हैं जो आधुनिक दुनिया में मौजूद सच्ची पौराणिक कथाओं की गहराई को शब्दों में पिरोते हैं। पटनायक के पास मिथकों और तथ्यों के बारे में अनुभव का खजाना है। विभिन्न संस्कृतियों की कई पौराणिक कथाओं को सदियों से स्क्रीन पर दिखाया जाता रहा है।इंडिया डॉट कॉम के साथ एक विशेष बातचीत में देवदत्त पटनायक ने बताया कि कैसे राम को नाटकीय रूप दिया गया है और यह पौराणिक कथाओं के लिए सही क्यों नहीं है। जब उनसे पूछा गया कि इस तरह की फिल्मों में पौराणिक

कथाओं को किस तरह से पर्दे पर पेश किया जाता है, तो पटनायक ने कहा, "मैंने कई टेलीविजन चैनलों, कई निर्माताओं के साथ काम किया है, उनका उद्देश्य बस एक है कि टीआरपी रेटिंग आनी चाहिए, शो सफल होना चाहिए, जिससे पैसे मिलेंगे। उनका एजेंडा पैसे बनाना है..."उनका कहना है कि निर्माता रामायण का लॉर्ड ऑफ़ द रिंग्स संस्करण बनाना चाहते हैं, और वे एक्शन सीक्वेंस चाहते हैं। रामायण एक्शन के बारे में नहीं है ,रामायण ड्रामा नहीं बल्कि मानवीय भावनाओं के बारे में है।

शोध के उद्देश्य:

1.साहित्य और सिनेमा में राम का चारित्रिक विश्लेषण करना।

2. साहित्य एवं सिनेमा के माध्यम से राम के आध्यात्मिक और सामाजिक संदेश का अध्ययन करना।

शोध पद्धति :

इस शोध अध्ययन में राम एवं रामकथा सम्बंधित विभिन्न कहानियों , लोक कथाओं , कविताओं , रामायण , रामचरितमानस , समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख, आलेख , पुस्तकें ,यूट्यूब वीडियो एवं फिल्मों का गहन अध्ययन किया गया है। इन आंकड़ों की प्रकृति गुणात्मक है इसलिए गहन अध्ययन के लिए अर्थपूर्ण समीक्षा हेतु अंतर्वस्तु विश्लेषण पद्धति का सार्थक प्रयोग किया गया है।

साहित्य में राम :

चौबीस सहस्त्र श्लोकों, पाँच सौ सगों, सात कांडों में श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण की रचना करने वाले महर्षि वाल्मीकि का नाम आदि कवि के रूप में बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है। वाल्मीकि,व्यास और कालिदास, ये तीनों भारत के सांस्कृतिक निर्माता माने जाते हैं, इनमें भी वाल्मीकि सर्वश्रेष्ठ स्थान के अधिकारी स्वीकार किए जाते हैं। उन्होंने उत्तर और दक्षिण के मध्य सांस्कृतिक सेतु का कार्य किया।[4] संस्कृत साहित्य में वाल्मीकि को आदि कवि और रामायण को आदिकाव्य कहा जाता है। वाल्मीकि के काल को निश्चित करने के लिए रामायण के रचनाकाल पर विचार करना अत्यंत आवश्यक है। रामायण के दो रूप माने जाते हैं-1. आदि रामायण 2. परिवर्द्धित अथवा प्रचलित रामायण। वाल्मीकि का समय 'आदि रामायण' को ध्यान में रखकर निश्चित करने का प्रयास किया गया है। पाश्चात्य विद्वान विलियम जॉन 'आदि रामायण' का समय 2029 ईसा पूर्व मानते हैं, जबकि टोड 1100 ईसा पूर्व और गोरोसियो 13वीं शताब्दी ईसा पूर्व स्वीकारते हैं।[5] डा. याकोबी रामायण को महाभारत तथा बुद्ध से पूर्व की रचना मानते हैं। उनके मतानुसार प्रचलित रामायण का समय ईसा पूर्व पाँचवीं शताब्दी है और 'आदि रामायण' का समय ईसा पूर्व छठी तथा आठवीं शताब्दी का मध्य है। इसके संबंध में जो तथ्य याकोबी ने प्रस्तुत किए, उन्हें काटते हुए ए. बी. कीथ आदि रामायण का समय ईसा पूर्व चतुर्थ शताब्दी मानते हैं। भारतीय विद्वानों में श्री चिंतामणि विनायक वैद्य रामायण को बुद्ध से पूर्व का स्वीकार करते हैं। श्री कृष्ण कुमार ओझा तथा रामाश्रय शर्मा भी इसे बुद्ध से पूर्व की रचना मानते हैं। बुद्ध के जन्म से पूर्व इसकी रचना होने का एक आधार यह भी माना जाता है कि जैन तथा बौद्ध ग्रंथों में राम कथा के स्पष्ट संकेत मिलते हैं। बौद्धों ने ईसवी सन् से कई शताब्दी पहले राम को बोधिसत्व मानकर रामकथा की लोकप्रियता और प्रभाव का परिचय दिया है। किंतु डॉ सत्यव्रत शास्त्री रामायण का काल पाणिनि के बाद का मानते हैं। इस प्रकार पाश्चात्य और भारतीय विद्वानों ने अपनी-अपनी युक्तियों के आधार पर वाल्मीकि और उनकी रचना का समय निर्धारित करने का प्रयास किया है किंतु इस बात पर समालोचकों में अभी तक सहमति नहीं बनी है। परंतु एक बात पर सभी सहमत हैं कि यह ग्रंथ ढाई हजार वर्ष पूर्व लिखा गया है। इस बात से भी प्रायः लोग सहमत हैं कि रामायण अन्य सभी काव्यों से प्राचीन है और भारत के कई प्रांतों में इसका प्रचार कई शताब्दी ईसा पूर्व हो चुका था। रामायण प्रथमतः मौखिक रूप में प्रचलित रही होगी और इसमें समय-समय पर प्रक्षेप भी होते रहे होंगे, इसी कारण उनके पाठों में भी पर्याप्त अंतर मिलता है। परिणामस्वरूप रामायण का मूल स्वरूप आज तक भी निर्धारित नहीं हो सका है और वाल्मीकि के जन्म काल के विषय में भी विद्वानों में सहमति नहीं बन पाई है।[6] पुरातत्त्वविदों के अनुसार वैदिक सभ्यता लगभग 1000 ई.पू. में गंगा के मैदानी क्षेत्रों में पनपी। इस

[4] □□ □□□□□ □□□□□, □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ और□□□□□□□□□□(□□□□□□□) एक□□□□□□□□□ □□□□□□, □□□□□ □□□□□□ 9)

[5] □□ □□□□□ □□□□□, □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ और□□□□□□□□□□(□□□□□□□) एक□□□□□□□□□ □□□□□□, □□□□□ □□□□□□ 5)

[6] डॉ करुणा शर्माए पुस्तक वाल्मीकि रामायण और रामकीर्ति,रामकीयनद्ध एक तुलनात्मक अध्ययनए पृष्ठ संख्या 6द्ध

प्रकार, सैकड़ों वर्षों तक इस कथा का मौखिक प्रसारण हुआ होगा। लगभग 1000 वर्ष पहले रामायण का पुनर्कथन क्षेत्रीय भाषाओं में होने लगा। तमिल में कम्बन-रामायण पहला पुनर्कथन था। उसके पश्चात तेलुगु, असमी, बंगाली, कनड़, मलयालम, मैथिली और अवधी में पुनर्कथन होते गए। इन पुनर्कथनों के माध्यम से राम भक्ति परम्परा का आदर्श बन गाए और लोग उन्हें भगवान के रूप में पूजने लगे। यह मुख्यतः तुलसीदास की अवधी रामायण (रामचरितमानस) पर आधारित है। ओडिया साहित्य में भी 15वीं और 18वीं सदियों के बीच रामायण के कई पुनर्कथन हुए। अधिकांश भारतवासी रामायण की कहानी इन क्षेत्रीय पुनर्कथनों को अपनी-अपनी मातृभाषाओं के माध्यम से ही सुनते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि राम भारतीय कला और संस्कृति में व्यापक हैं।

शबरी के जूठे बेरों की कहानी वाल्मीकि रामायण या तुलसी रामायण में नहीं, बल्कि प्रियदास द्वारा 18वीं सदी में लिखित 'भक्ति-रस-बोधिनी' में पाई जाती है। वैष्णव संतों पर कहानियों का यह संग्रह ब्रजभाषा में लिखा गया था। सम्भवतः, इस कहानी का स्रोत उसके 200 वर्ष पहले ओडिया रामायण की कहानी में मिलता है। उस कहानी के अनुसार, सीता की खोज करते समय, राम एक जनजातीय पुरुष (शबर) और स्त्री (शबरी) से मिले थे। उन्होंने राम के चरणों को धोकर उन्हें एक आम प्रस्तुत किया। हालांकि शबरी के पास के अधिकांश आमों पर दांतों के चिह्न थे। उसने राम को एक 'सुंदरी' आम प्रस्तुत किया, जिस पर कोई चिह्न नहीं था। इस पर राम ने कहा, आपको कैसे पता कि यह आम दूसरे आमों जितना मीठा है? आपने उसे चखा ही नहीं है। मुझे ऐसा आम दें जो आप जानती हैं कि मीठा है। इस प्रकार राम ने जूठा आम खाकर 'जाति शुद्धता' के नियमों को नकारा। (यह कहानी 'मट्ट' बलराम दास द्वारा 15वीं सदी में लिखित दांडी रामायण से है।)[7]

वाल्मिकी रामायण में वर्णित रामराज्य की अनूठी विशेषताएं इस प्रकार वर्णित हैं :

- भगवान राम ने 11,000 वर्षों तक सपूर्ण पृथ्वी पर शासन किया। उस समय अयोध्या संपूर्ण विश्व की राजधानी थी।
- भोजन, वस्त्र और आवास की कोई कमी नहीं थी। गरीबी नहीं थी क्योंकि लोग लालची नहीं थे और प्रकृति का शोषण नहीं करते थे।
- भगवान राम के शासनकाल में वन, नदियाँ, पर्वत, पृथ्वी, सातों द्वीप और सात समुद्र प्रचुर मात्रा में जीवन की सभी आवश्यकताएँ प्रदान करते थे।
- सभी नागरिक भगवान राम से प्यार करते थे, वे हमेशा भगवान की गतिविधियों पर चर्चा करते थे।

श्रीराम का चरित्र उदात्त है और तुलसीदास ने रामचरितमानस में इसे बहुत प्रभावी तरीके से रूपायित किया है। मानस को महात्मा गांधी ने 'भक्ति साहित्य की सबसे महान पुस्तक' कहा था। इसे विश्व की महानतम साहित्य-कृतियों में भी स्थान दिया गया है। अनेक लोगों को मानस का एक बड़ा हिस्सा कंठस्थ है। तुलसी ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के व्यक्तित्व में गहनता से प्रवेश किया था। उनके लिए राम ही ब्रह्म थे- अचिन्त्य, अदृष्ट, अखण्ड, सम्पूर्ण, निर्विशेष चिन्मात्रम् (अविभाज्य चेतना), सर्वव्यापी और निर्गुण। श्रीराम एक पूर्ण, निर्गुण ब्रह्म की सगुण-अभिव्यक्ति थे। इसी बात को तुलसी ने पूरे मानस में रेखांकित किया है। उदाहरण के लिए, वह कहते हैं:

अगुण सगुण दोई ब्रह्म स्वरूपा।
अकथ अगाथ अनादि अनूपा।।
(अर्थात्, अगुण और सगुण ब्रह्म के ही दो रूप हैं अनिर्वचनीय, अथाह और बिना किसी आरम्भ या सादृश्यता के)

या फिर, जब वे रामावतार को ब्रह्म के रूप में उनके मूल स्वभाव के साथ जोड़ते हैं तो कहते हैं:

फूले कमल सोह सर कैसा।
निर्गुण ब्रह्म सगुण बने जैसा।।
(झील में खिला कमल कितना सुंदर दिखता है? उसी तरह से निर्गुण ब्रह्म भी सगुण रूप में खिलता है।)

[7] ;16 जनवरी 2024ए दैनिक भास्कर में प्रकाशित आलेख ए पृष्ठ संख्या २6द्ध

वे यह भी बताते हैं कि परम ब्रह्म ने राम का रूप ही क्यों धारण किया, जिनकी हम उपासना करते हैं:

अगुण अरूपा अलख अज जोई।
भगति प्रेम बस सगुण हो जोई।।
(अर्थात, वे राम जो निर्गुण और निराकार, अगोचर और अजन्मे हैं, केवल अपने भक्तों के प्रेम से ही सगुण रूप धारण करते हैं।)

रामावतार की विशिष्टता उनके मर्यादा पुरुषोत्तम होने की है, जो सत्यनिष्ठा के प्रतीक,निष्कलंक आचरण की कसौटी और एक आदर्श मनुष्य के साकार रूप हैं। वे सदैव कर्तव्य-पथ पर प्रतिबद्ध रहते हैं। उन्हें अपने राज्य से चौदह वर्ष के लिए निर्वासित कर दिया गया था। राम जानते थे कि इस षड्यंत्र के पीछे उनकी सौतेली मां कैकेयी का हाथ है। लेकिन जब वे उनसे मिलते हैं, तो उनके मन में कोई द्वेष नहीं होता। इसके बजाय वे कहते हैं:

बोले बचन विगत सब दूषन।
मृदु मंजुल जनु बाग विभूषन ।।
सुनु जननि सोइ सुतु बड़भागी।
जो पितु मातु बचन अनुरागी।।
(देखें कि श्रीराम ने कितने मधुर और प्रिय वचन कहे सुनो माता, वह पुत्र धन्य है, जो अपने माता-पिता की आज्ञा के प्रति समर्पित है।)
राम की यह धीरोदात्त शालीनता ही उनके परिवार से उनके संबंधों को परिभाषित करती है। सीता के प्रति उनके प्रेम में लीला पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण की नटखट बरजोरी का अभाव है, परंतु वह उतना ही प्रगाढ़ तथा सदैव मर्यादापूर्ण है। मानस की सबसे सुचारु पंक्तियों में से एक में तुलसी ने
राम की प्रतिक्रिया का वर्णन किया है, जब उन्होंने पहली बार सीता को देखा था :

सुंदरता कहुं सुंदर करई। छबिगृह दीपसिखा जनु बरई॥
सब उपमा कबि रहे जुठारी। केहिं पटतरी बिदेहकुमारी॥
(वे सुंदरता को ही सुंदरता प्रदान करती हैं और किस दीपशिखा की तरह भव्य प्रासाद को आलोकित करती हैं। कवियों द्वारा प्रयुक्त सभी उपमाएं उनके सम्मुख ग्लान पड़ जाती हैं, ऐसी कोई उपमा नहीं जिसकी तुलना विदेह-कुमारी से कर सकूं।)

राम का आचरण सौम्य था। वे कलह के नहीं सद्भाव के, विभाजन नहीं संयोग के, शत्रुता नहीं सौहार्द के और कटुता नहीं सद्भावना के पक्षधर थे। उनका चरित्र सदा-सर्वदा अनुकरणीय है।[8]

कभी-कभी विद्वज्जनों में इस बात को लेकर भी चर्चा होती है कि रामायण में वर्णित राम, सीता और लक्ष्मण जैसे चरित्र ऐतिहासिक हैं अथवा नहीं। अरबी-फारसी में मसीह नामक एक कवि ने रामायण की पूरी कथा को फारसी में काव्यबद्ध किया था, 'दी बाचाए रामायण' जिसमें 346वें शेर में स्पष्ट लिखा है, 'के ई अफसाना तरीख अस्त ई जा'। अर्थात् रामायण एक अमिट ऐतिहासिक कथा (तारीखे अफसाना) बन चुकी है। इसमें वर्णित चरित्र कैसे थे, क्या थे, इस तर्क में पड़े बिना मेरा तो यही मानना है कि यदि आज ये चरित्र अपना महत्व और अस्तित्व स्थापित किए हुए हैं, तो इसका एकमात्र आधार रामायण ही है। यह रामायण ही है जिसका आधार लेकर रचे गए अनगिनत साहित्य रत्न न केवल भारत में, बल्कि संपूर्ण विश्व के साहित्य-भंडार की शोभा बढ़ा रहे हैं। कई देशों के मंदिरों, स्मारकों एवं पूजास्थलों में वास्तु, मूर्ति, चित्र और संगीत के प्रदर्शन रामायण के जीवंत प्रभाव के साक्षी हैं। आदिकवि के काव्य की लोकप्रियता
और व्यापकता केवल भारतीय सीमाओं में ही बद्ध नहीं रही अपितु विदेशों में भी इसका प्रभाव पड़ा। संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश तथा समस्त आधुनिक भारतीय भाषाओं में रामकथा से संबंधित जिन ग्रंथों की रचना हुई है तथा एशिया के दक्षिण-पूर्व, पूर्व तथा उत्तर-पश्चिम के देशों एवं यूरोप के इंगलैंड, फांस, रूस, जर्मनी, इटली, डेनमार्क, स्पेन आदि देशों में जो भी रामविषयक साहित्य एवं सामग्री उपलब्ध है, उन सबका आधार पूर्ण अथवा आंशिक रूप से रामायण ही है। दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों की संस्कृति और ललित कलाओं पर रामायण के प्रभाव और अनुकरण को देखकर विद्वानों का विचार है कि संसार का बहुत सा भाग वाल्मीकि के महाकाव्य पर ही निर्मित है और अगर कोई गाथा है जिसे पूरा एशिया अपना कह सकता है, वह राम गाथा है। रामायण चाहे जब भी रची गई हो, लेकिन यह तो इस रचना का अद्भुत चमत्कार ही कहा जाएगा कि जब से यह रची गई, तब से लेकर आज तक यह साहित्यकारों के लिए अक्षय प्रेरणा का स्त्रोत ही बनी हुई है। संस्कृत भाषा में कालिदास, भवभूति जैसे अनेक कवियों ने महाकाव्य, खंडकाव्य, चम्पूकाव्य,

[8] (17 □□□□□ 2024, □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□ , □□□□□ □□□□□□ 2)

नाटक आदि का सृजन किया, तो दूसरी अन्य भाषाओं में अनेक कवियों ने इसे आधार बनाकर अनेक रामायणों की अनेक रामायणों की रचना की जैसे तमिल की कंब रामायण, बंगला की कृत्तिवास, मराठी की भावार्थ रामायण, तेलगु की श्रीरंगनाथ रामायण, कन्नड़ की रामचंद्र चरित पुराणम्, मलयालम की अध्यात्म रामायण, उर्दु की चकबस्त रचित, अवधी की श्रीरामचरितमानस आदि। आधुनिक युग में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का 'साकेत' इसका सटीक उदाहरण है। 'साकेत' में कवि ने लिखा है,

"राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है।

कोई कवि बन जाए सहज संभाव्य है।।"

कहने का अर्थ है कि राम का चरित आज भी परवर्ती कवियों की प्रतिभा का मूल उत्स और प्रेरणा का स्त्रोत बना हुआ है।[9]

सिनेमा में राम:

भारतीय साहित्य के आदिनायक मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, धर्म परायणों के आदर्श आराध्य, हमारी परंपराओं की श्रेष्ठतम स्थान रखने वाले महापुरुष, जिनका जीवन चित्रित कर आदि कवि वाल्मीकि अमरत्व को प्राप्त हो गए। राम जी के भक्ति सागर में डूबकर गोस्वामी तुलसीदास ने श्रीरामचरित मानस जैसे महाकाव्य की रचना की, ऐसे मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के व्यक्तित्व के आकर्षण से भला भारतीय सिनेमा कैसे अछूता रह सकता था। भगवान श्रीराम के आदर्श चरित्र का यह अनूठा आकर्षण ही रहा कि उनके व्यक्तित्व से प्रेरणा ग्रहण कर अब तक बड़ी संख्या में फिल्मों का निर्माण हो चुका है और अब भी हो रहा है। रामायण की कहानी वही रही है लेकिन समय-समय पर उभरती नई तकनीकों ने फिल्म निर्माताओं को महाकाव्य के विभिन्न तत्वों को जीवंत करने के लिए उत्साहित किया, जो वर्णन के दौरान अविश्वसनीय लगते थे,111 साल के हिंदी सिनेमा के इतिहास में रामायण पर अब तक 48 फिल्में और 18 टीवी शो बन चुके हैं और ज्यादातर फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस पर अच्छी कमाई की है।1917 में यानी 106 साल पहले आई लंका दहन ने 10 दिनों में ही 35 हजार रुपए की कमाई कर ली थी। भले ही रामायण पर इतनी फिल्में और टीवी शो बन चुके हैं, लेकिन 2023 में रिलीज हुई आदिपुरुष से पहले केवल एक फिल्म में राम को मूंछों में दिखाया गया है। ये फिल्म 23 साल पहले यानी 2000 में रिलीज हुई थी जिसका नाम देवुल्लू था। ये तेलुगु फिल्म थी जिसमें राम की भूमिका निभा रहे श्रीकांत को मूंछों में दिखाया गया था।[10]

रामायण को स्क्रीन के लिए भी रूपांतरित किया गया है, विभिन्न दशकों में अलग-अलग भाषाओं में इस महाकाव्य से प्रेरित अनेक फिल्मों का निर्माण हुआ, रामायण पर आधारित मुख्य फिल्में निम्नलिखित हैं-

दस से तीस के दशक में - लंका दहन(1917), चन्द्रसेना (1931), राम पादुका पट्टाभिषेकम (1932 तेलुगु), सीता कल्याणम (1934 तमिल),सीता विवाह (1936 उड़िया) साथी अहिल्या (1937 तमिल), सेतु बन्धनम् (1937 तमिल)

40 के दशक में- भूकैलाश (1940 तेलुगु), महिरावण (1940 तेलुगु), वेदवती अल्लधु सीता जननम (1941 तमिल), भारत मिलाप (1942), रामराज्य (1943), पादुका पट्टाभिषेकम, श्री सीता रामम जन्मम (1944 तेलुगु, (1945 तेलुगु), रामायणी (1945), रामबाण (1948), श्री राम भक्त हनुमान (1948)

50 के दशक में- हनुमान पाताल विजय(1951), लंका दहन(1952), रामायण(1954), भूकैलास (1958), भूकैलास (1958 कन्नड़), सम्पूर्ण रामायण(1958 तमिल)

60 के दशक में- सीता (1960 मलयालम), इंद्रजीत सती सुलोचना (1961 तेलुगु), सम्पूर्ण रामायण (1961), सती सुलोचना (1961 कन्नड़), सीता राम कल्याणम (1961 तेलुगु), श्री राम पट्टाभिषेकम (1962 मलयालम), श्री रामंजेनया युद्धम, लव कुश(1963 तमिल,तेलुगु),(1963 कन्नड़), राम राज्य (1967), वीरांजनेय (1968 तेलुगु)

[9] ,डॉ करुणा शर्मा ए पुस्तक वाल्मीकि रामायण और रामकीर्ति,रामकीयनद्ध एक तुलनात्मक अध्ययनए पृष्ठ संख्या 9ए10द्ध

[10] ,कविता राजपूतए दैनिक भास्कर ऐप में प्रकाशित आलेख 2023द्ध

70 के दशक में- सम्पूर्ण रामायणम (1972 तेलुगु), हनुमान विजय (1974), श्री रामंजेनया युद्धम (1975 तेलुगु), मुथ्याला मुग्गु (1975 तेलुगु), बजरंग बली (1976), दशावतारम (1976 तमिल), सीता कल्याणम (1976 तेलुगु), श्री राम पट्टाभिषेकम (1976 तेलुगु), कंचना सीता (1977 मलयालम), श्री राम वनवासम (1977)

80 के दशक में- रावण (1984), इलंगेश्वरन (1987 तमिल), कलयुग और रामायण (1987)

90 के दशक में- लव कुश (1997 हिंदी),रामायणम/बाला रामायणम (1997 तेलुगु)

वर्ष 2000 से लेकर अब तक- रावणन (2010 तमिल), रावण (2010), रामायणा द एपिक (2010 एनीमेटेड), श्री राम राज्यम (2011 तेलुगु), लंके (2021 कन्नड़), रामसेतु (2022), आदिपुरुष (2023)

रामायण से प्रेरित फिल्मों और टीवी श्रृंखलाओं पर एक नजर:

पौराणिक फिल्मों का दौर में 1980 के दशक और (1987-88) में उसी के साथ एक टेलीविजन श्रृंखला में निर्माता रामानंद सागर द्वारा रामचरितमानस और वाल्मिकी रामायण पर आधारित 'रामायण' नाम से ही टेलीविज़न धारावाहिक शुरू किया गया।

इस श्रृंखला को दर्शकों का इतना प्यार और ध्यान मिला कि शो देखने के लिए सैकड़ों लोग एक ही टेलीविजन सेट के आसपास जमा हो जाते थे। जब शो प्रसारित होता था तो सड़कें सुनसान हो जाती थीं और दुकानें बंद हो जाती थीं। रामायण, भारत भर के हिंदू घरों में अंतर्निहित एक कहानी है, जिसने इसे कई बार बड़े और छोटे स्क्रीन दोनों पर प्रदर्शित किया। श्रृंखला का वर्णन अशोक कुमार ने किया था, जिसमें अरुण गोविल ने भगवान राम का मुख्य किरदार निभाया था। श्रृंखला को कई बार टीवी पर पुनः प्रसारित किया गया, और जब इसे 2020 में कोविड-प्रेरित लॉकडाउन के दौरान प्रसारित किया गया तो इसे नई लोकप्रियता मिली। 1987 श्रृंखला की सफलता के बाद, कई अन्य रूपांतरण तैयार किए गए। इनमें 2002, 2008 और 2012 में प्रसारित 'रामायण' श्रृंखला शामिल है, प्रत्येक प्राचीन कहानी को समकालीन उत्पादन मूल्यों और कहानी कहने की तकनीकों के साथ नए दर्शकों तक लाती है। रामायण पर आधारित अन्य उल्लेखनीय टीवी श्रृंखलाओं में 'रावण' शामिल है, जो महाकाव्य के प्रतिपक्षी पर ध्यान केंद्रित करके एक अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, और 'राम सिया के लव कुश', जो राम और सीता के जुड़वां बेटों के दृष्टिकोण से कहानी बताता है। इसके अतिरिक्त 'सिया के राम' एक और रूपांतरण है जिसे कथा के अनूठे दृष्टिकोण के लिए सराहा गया है। रामायण का प्रभाव इन प्रत्यक्ष रूपांतरणों से कहीं आगे तक फैला हुआ है। 'जय हनुमान' और 'संकट मोचन महाबली हनुमान' जैसी अन्य श्रृंखलाएँ रामायण में एक केंद्रीय व्यक्ति भगवान हनुमान के जीवन और रोमांच पर प्रकाश डालती हैं। 'लव कुश' श्रृंखला राम के पुत्रों पर ध्यान केंद्रित करते हुए महाकाव्य के बाद के हिस्सों का वर्णन करती है, जबकि दूरदर्शन पर 'विष्णु पुराण' और 'विश्वामित्र' अन्य पौराणिक कहानियों का वर्णन करते हैं,जो रामायण की बड़ी कथा से जुड़ी हैं।

रामायण से प्रेरित टेलीविजन श्रृंखलाओं की सूची में 'भारत एक खोज', 'जय जय जय बजरंग बली', 'द लीजेंड ऑफ हनुमान', 'द न्यू एडवेंचर्स ऑफ हनुमान', और 'रामलीला - अजय देवगन के साथ' आदि भी शामिल हैं।

हिंदू काव्य रामायण पर केवल भारत में ही नहीं, बल्कि जापान में भी फिल्म बन चुकी है। इस जापानी फिल्म का नाम 'रामायण द लीजेंड ऑफ प्रिंस रामा था जो कि एनिमेटेड फिल्म थी। दरअसल, 1983 में जापानी फिल्ममेकर यूगो साको जब पहली बार भारत आए तो उन्हें रामायण के बारे में मालूम चला। उन्होंने जापानी में रामायण के 10 वर्जन पढ़े और फिल्म बनाने के बारे में सोचा। 450 आर्टिस्ट्स ने फिल्म की मेकिंग में हिस्सा लिया। सीरियल रामायण में राम का किरदार निभाने वाले अरुण गोविल ने इस फिल्म की हिंदी डबिंग में राम के कैरेक्टर के लिए आवाज दी थी। 1992 में जब फिल्म रिलीज होने का मौका आया तो बाबरी मस्जिद विवाद के चलते इसे इंडिया में रिलीज नहीं किया गया। बाद में इसे कार्टून नेटवर्क पर दिखाया जाने लगा था। इसी कड़ी में 'प्रिंस ऑफ लाइट' भी 1990 के दशक की शुरुआत में रिलीज़ हुई थी, उसके बाद 'वॉरियर प्रिंस' भी रिलीज हुई। इसके अलावा, हनुमान पर दो एनिमेटेड फिल्में भी बनाई गई हैं,2005 में 'हनुमान' और 2007 में 'हनुमान रिटर्न्स'। वहीं वर्जिन कॉमिक्स द्वारा भी रामायण पर आधारित वीडियो गेम्स बनाये गए। इसलिए रामायण अपने आप में एक संस्कृति है।

रामायण की कहानी वही रही है लेकिन समय-समय पर उभरती नई तकनीकों ने फिल्म निर्माताओं को महाकाव्य के विभिन्न तत्वों को जीवंत करने के लिए उत्साहित किया, जो वर्णन के दौरान अविश्वसनीय लग रहे थे। महाकाव्यों के साथ भारतीय सिनेमा का जुड़ाव मूक फिल्म युग के दौरान शुरू हुआ, जो सन्1913 से सन् 1931 तक चला। इस अवधि को फिल्मों में ध्वनि की अनुपस्थिति के रूप में चिह्नित किया गया था, संवाद और कथा विवरण व्यक्त करने के लिए इंटरटाइटल पर निर्भर रहना पड़ता था। रामायण पर आधारित पहली फिल्म सन् 1917 में भारतीय सिनेमा के पितामह दादा साहब फाल्के ने बनाई थी। 'लंका दहन' शीर्षक वाली यह फिल्म रामायण के एक एपिसोड के इर्द-गिर्द घूमती है

जहां हनुमान सीता की तलाश में लंका के लिए उड़ान भरते हैं लेकिन रावण की सेना द्वारा पकड़ लिए जाते हैं। उड़ने से पहले वह अपनी पूंछ से लंका में आग लगा देता है। बिष्णुप्रिया घोष ने अपनी पुस्तक 'ग्लोबल आइकॉन्स: एपर्चर्स टू द पॉपुलर' में लिखा है कि यह फिल्म सफल रही, क्योंकि लोग सिनेमाघरों में आते थे और भक्तिभाव से सिनेमाघरों के बाहर अपने जूते उतार देते थे। दिलचस्प बात यह है कि फिल्म में राम और सीता की भूमिका एक ही अभिनेता अन्ना सालुंके ने निभाई थी, क्योंकि उस समय महिलाओं को फिल्मों में अभिनय करने की अनुमति नहीं थी।

पहली प्रमुख गैर-मूक फिल्म 'राम राज्य' (1943) थी, जिसका निर्देशन विजय भट्ट ने किया था, जिसमें प्रेम अदीब ने भगवान राम की भूमिका निभाई थी और शोभना समर्थ ने सीता की भूमिका निभाई थी। यह फिल्म उत्तर कांड पर आधारित थी और इसके युद्ध दृश्यों में विशेष प्रभावों का उपयोग करने के कारण यह एक बड़ी सफलता थी। फ्रीक एल बेकर ने अपनी पुस्तक 'द चैलेंज ऑफ द सिल्वर स्क्रीन' में लिखा है कि राम राज्य को महात्मा गांधी द्वारा देखी गई एकमात्र फिल्म के रूप में भी याद किया जाता है। जैसे ही रंग प्रौद्योगिकी का उदय हुआ, रामायण जैसे महाकाव्यों की भव्यता में जीवंतता जुड़ गई। रामायण का पहला रंगीन संस्करण 1963 में जारी किया गया था। फिल्म 'लव कुश', जिसमें राम के रूप में एनटी रामाराव और सीता के रूप में अंजलि देवी ने अभिनय किया था, एक बड़ी हिट थी। मूल रूप से 1963 में बनी यह फिल्म तमिल, कन्नड़ और हिंदी में भी रिलीज हुई थी।

एनटीआर युग -

एनटी रामा राव, जिन्हें एनटीआर के नाम से भी जाना जाता है, तेलुगु फिल्म उद्योग के सबसे बड़े सितारों में से एक थे। अपने पूरे करियर के दौरान वह रामायण पर आधारित कई फिल्मों से जुड़े रहे। भगवान राम का उनका चित्रण आज भी बड़े पर्दे पर हिंदू देवता की सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुतियों में से एक है। उन्होंने पहली बार 1958 की फिल्म 'संपूर्ण रामायणम' में भगवान राम के रूप में अभिनय किया। यह फिल्म बहुत बड़ी हिट थी और इसे तमिल और हिंदी में वर्ष 1958, 1961 और 1971 में एक ही शीर्षक के साथ तीन बार बनाया गया था। दिलचस्प बात यह है कि एनटीआर ने उसी वर्ष 1958 में फिल्म 'भूकैलास' में रामायण के मुख्य खलनायक रावण की भूमिका भी निभाई थी। दशकों बाद, एनटीआर के बेटे नंदमुरी बालकृष्ण ने 2011 में 'लव कुसा' को 'श्री राम राज्यम' के रूप में बनाया। बालकृष्ण ने खुद फिल्म में भगवान राम की भूमिका निभाई, जबकि नयनतारा ने सीता की भूमिका निभाई।भगवान राम द्वारा अपनी पत्नी को त्यागने की भावनात्मक दुविधा को स्क्रीन पर शानदार ढंग से पेश करने के लिए बालकृष्ण के देवता के चित्रण की प्रशंसा की गई। सीनियर एनटीआर के संस्करण के समान, दृश्य प्रभावों और भक्ति भाव के सही मेल के लिए भी फिल्म की प्रशंसा की गई।

हिंदी फिल्मों में रामायण-

सबसे शुरुआती हिंदी रूपांतरणों में से एक बाबूभाई मिस्त्री द्वारा निर्देशित 'संपूर्ण रामायण' (1961) है, जो भगवान राम के जन्म से लेकर राक्षस राजा रावण पर उनकी जीत तक की पूरी गाथा बताता है। 1976 में पहलवान से अभिनेता बने दारा सिंह ने चंद्रकांत द्वारा निर्देशित और निर्मित 'बजरंगबली' में भगवान हनुमान की भूमिका निभाई। रामानंद सागर की टेलीविजन श्रृंखला रामायण में भूमिका को अमर बनाने से पहले हनुमान के रूप में दारा सिंह की यह पहली उपस्थिति थी।

मणिरत्नम की रावण (2010) महाकाव्य पर एक आधुनिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जिसमें अभिषेक बच्चन, ऐश्वर्या राय और विक्रम ने केंद्रीय पात्रों के समकालीन संस्करण निभाए हैं। इस सूची में सबसे हालिया 'आदिपुरुष' (2023) के रूप में रामायण की कहानी सिनेमा के पर्दे पर एक बार फिर लौटी। वर्ष 2023 में बजट के लिहाज से आदिपुरुष हिंदी सिनेमा की सबसे महंगी फिल्म है। इसका बजट 600 करोड़ रुपए था। जिसमें प्रभास ने भगवान राम और सैफ अली खान ने रावण की भूमिका निभाई है। जबकि फिल्म ने समकालीन दर्शकों से जुड़ने के लिए दृश्य प्रभावों और एक आधुनिक पटकथा पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित किया था, यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर असफल रही और हिंदू महाकाव्य का मजाक उड़ाने के लिए निर्देशक ओम राउत की भारी आलोचना की गई। थ्रीडी,वीएफएक्स और सीजीआई भी प्रभावशाली नहीं हो पाए क्योंकि स्क्रीनप्ले और संवाद में कई तरह की खामियां सामने आयी ,जहां बजरंग बली(देवदत्त) और इंद्रजीत(वत्स्ल सेठ) के बीच 'कपड़ा तेरे बाप का तो जलेगी भी तेरी बाप की','तेरी बुआ का बगीचा है क्या' आदि संवाद देखने को मिलते हैं। निर्देशक ओम राउत ने इस फिल्म को मॉडर्न लुक देने के लिए रावण की लंका को गहरे स्लेटी और काले रंग के महल जैसा दर्शाया है जो वास्तव में रावण की चमचमाती सोने की लंका से बिलकुल विपरीत 'हैरी पॉटर' और 'गेम ऑफ़ थ्रोन्स' के किले की भांति प्रतीत होती है।

वहीं क्षेत्रीय सिनेमा की बात की जाये तो, रामायण के सार को कायम रखते हुए, बंगाली, तमिल, तेलुगु और मलयालम सिनेमा के फिल्म निर्माताओं ने भगवान राम द्वारा सन्निहित मानवतावादी पहलुओं, नैतिक दुविधाओं और दार्शनिक शिक्षाओं पर प्रकाश डालते हुए अद्वितीय दृष्टिकोण का योगदान दिया है।

बंगाली सिनेमा-

हिंदी सिनेमा और दक्षिण के सिनेमा, विशेषकर तमिल सिनेमा, जो पौराणिक संदर्भों से समृद्ध है, के विपरीत, बंगाल का सिनेमा काफी हद तक 'धर्मनिरपेक्ष' रहा है। राम से अधिक, यह देवी या देवी दुर्गा हैं जो बंगाली सिनेमा का हिस्सा रही हैं। ऋत्विक घटक की रचनाओं में भी नारी का देवी माँ के रूप में चित्रण हुआ है। राम का चित्रण, हिंदू पौराणिक कथाओं में एक पूजनीय व्यक्ति, बंगाली सिनेमा में केवल अस्थायी और अक्सर अप्रत्यक्ष संदर्भ होते हैं। बंगाली सिनेमा में, राम का चित्रण अक्सर पारंपरिक कथाओं का पालन करता है जैसा कि वाल्मिकी रामायण या तुलसीदास कृत रामचरितमानस जैसे प्राचीन ग्रंथों में दर्शाया गया है। 1936 में देबकी बोस द्वारा निर्देशित 'श्री रामकृष्ण' जैसी फिल्में, बंगाली सिनेमा में राम के शुरुआती सिनेमाई प्रतिनिधित्वों में से एक थीं। इस सिनेमाई प्रयास का उद्देश्य राम से जुड़े दैवीय गुणों और आध्यात्मिक शिक्षाओं को चित्रित करना है, जिसमें उनके नैतिक और नैतिक सिद्धांतों पर जोर दिया गया है। देबकी बोस द्वारा निर्देशित फिल्म 'सीता' में, सीता के परिप्रेक्ष्य पर ध्यान केंद्रित किया गया है, उनके परीक्षणों और कष्टों को उजागर करते हुए, रामायण का एक सूक्ष्म चित्रण पेश किया गया है। इसके अलावा, राम के चरित्र को विभिन्न रूपों में चित्रित किया गया है, जो बंगाल के विकसित होते सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य को दर्शाता है। अमर चौधरी की 'रामेर सुमति' (1947) और मधु बोस की 'श्री रामकृष्ण लीला'(1955) जैसी फिल्मों ने राम को धार्मिकता और धर्म (कर्तव्य) के पालन के प्रतीक के रूप में चित्रित किया, जो उस समय के प्रचलित सामाजिक मूल्यों के साथ मेल खाता था। इन सिनेमाई प्रस्तुतियों का उद्देश्य राम के चरित्र के माध्यम से नैतिक गुणों और नैतिक सिद्धांतों को सुदृढ़ करना था। 1960 और 1970 के दशक में बंगाली सिनेमा में राम के चित्रण में बदलाव देखा गया। फिल्म निर्माताओं ने कथा शैलियों और चरित्र व्याख्याओं के साथ प्रयोग करना शुरू कर दिया, राम को दैवीय पूर्णता के प्रतीक के बजाय अधिक मानवीय रूप में प्रस्तुत किया। ऋत्विक घटक की 'मेघे ढाका तारा'(1960) और सत्यजीत रे की 'गोपी गाइन बाघा बाइन' (1969) में प्रतीकात्मक रूप से रामायण से प्रेरित तत्वों को शामिल किया गया है, जो बलिदान, मुक्ति और बुराई पर अच्छाई की विजय के विषयों की खोज करते हैं। इन फिल्मों ने समकालीन सामाजिक मुद्दों और मानवीय संघर्षों पर टिप्पणी करने के लिए महाकाव्य से प्राप्त रूपकों और रूपकों का उपयोग किया।

हाल के वर्षों में, बंगाली सिनेमा में पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक संवेदनाओं के मिश्रण के साथ राम के चरित्र को चित्रित करने में पुनरुत्थान देखा गया है। 'राजकाहिनी' (2015) और 'गुमनामी' (2019) में श्रीजीत मुखर्जी जैसे फिल्म निर्माताओं ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस के जीवन के अंतिम वर्षों के आसपास के विवादास्पद सिद्धांतों को राम के व्यक्तित्व से जोड़ा। इन फिल्मों ने राम को वीरता, बलिदान और देशभक्ति के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया, आलोचनात्मक सोच और आत्मनिरीक्षण को प्रेरित करने के लिए ऐतिहासिक कथाओं को पौराणिक स्वरों के साथ जोड़ा।

इसके अलावा, नंदिता रॉय और शिबोप्रसाद मुखर्जी द्वारा निर्देशित 'रामधनु' (2014) जैसे रूपांतरणों ने राम को पारिवारिक बंधन और पालन-पोषण के प्रतीक के रूप में प्रदर्शित किया। फिल्म में आधुनिक माता-पिता द्वारा अपने बच्चों को नैतिक मूल्य प्रदान करने में आने वाली चुनौतियों पर जोर दिया गया है, जिसमें राम और उनके पुत्रों लव और कुश की शिक्षाओं की समानताएं दर्शाई गई हैं।

तमिल सिनेमा-

तमिल सिनेमा ने भी क्षेत्रीय स्पर्श के साथ अपनी व्याख्याएँ प्रस्तुत करते हुए, रामायण महाकाव्य को अपनाया है। के.राघवेंद्र राव और भारतीराजा जैसे निर्देशकों ने सिनेमाई रूपांतरण तैयार किया है जो तमिल दर्शकों को पसंद आता है। ये फ़िल्में अक्सर पात्रों की भावनात्मक बारीकियों को गहराई से उजागर करती हैं, जिनमें राम को सदाचार और बलिदान के प्रतीक के रूप में चित्रित किया जाता है। तमिल सिनेमा में राम का चित्रण क्षेत्र के सांस्कृतिक लोकाचार को प्रतिध्वनित करता है, स्थानीय परंपराओं और मूल्यों को महाकाव्य कथा के साथ जोड़ता है। 'लव कुसा' और 'श्री राघवेंद्र' जैसी फिल्मों ने पारिवारिक रिश्तों, वीरता और नैतिक दुविधाओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए राम की यात्रा को प्रस्तुत किया है, जो तमिल दर्शकों के साथ दृढ़ता से जुड़ती है।

तेलुगु सिनेमा-

तेलुगु सिनेमा अपनी भव्यता और जीवन से बड़ी कहानी कहने के लिए जाना जाता है, यहां राम की कहानी को विभिन्न रूपांतरों में चित्रित कियागया है। बापू और गुणशेखर जैसे फिल्म निर्माताओं ने रामायण के पुनर्कथन में नाटक, संगीत और दृश्य तमाशा के तत्वों को शामिल करते हुए अपने अद्वितीय निर्देशकीय दृष्टिकोण लाए हैं। तेलुगु सिनेमा में राम का चित्रण अक्सर उनके दिव्य गुणों और धार्मिकता के अवतार पर जोर देता है। बापू द्वारा निर्देशित 'श्री राम राज्यम' जैसी फिल्में सत्य और न्याय के प्रति राम की अटूट प्रतिबद्धता के साथ-साथ व्यक्तिगत संबंधों और कर्तव्य के बीच फंसे एक राजा के रूप में उनके संघर्ष को प्रदर्शित करती हैं।

मलयालम सिनेमा-

मलयालम सिनेमा ने रामायण को एक ऐसे दृष्टिकोण से पेश किया है जो आध्यात्मिकता, मानवीय भावनाओं और सामाजिक-सांस्कृतिक टिप्पणियों को जोड़ता है। जी. अरविंदन और हरिहरन जैसे फिल्म निर्माताओं ने महाकाव्य की नैतिक जटिलताओं और दार्शनिक पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए, राम का सूक्ष्म चित्रण पेश किया है।मलयालम सिनेमा में राम का चित्रण अक्सर उनकी दार्शनिक शिक्षाओं और नैतिक सिद्धांतों पर केंद्रित होता है। पी. जी. विश्वम्भरन द्वारा निर्देशित 'सीता स्वयंवरम' जैसी फिल्में राम और सीता की आध्यात्मिक यात्रा, उनके आंतरिक संघर्षों और धार्मिकता के व्यापक विषय की खोज पर जोर देती हैं

निष्कर्ष-

रामायण मुख्यतः एक पारिवारिक महाकाव्य है । इस काव्य का परिवार सामाजिक समरसता, मानव गौरव और भ्रातृत्व की विराट् भावना की बुनियाद है। सारा संसार सीता और राम को आदर्श दंपति मानकर उनकी पूजा करता है किन्तु उनका जैसा दाम्पत्य जीवन किसी को भी स्वीकार्य नहीं होगा। इससे स्पष्ट होता है कि उनके दाम्पत्य जीवन में मानव की सहनशीलता का कितना उदात्त उन्नयन हो पाया है। पीड़ा सहने से यदि लोक कल्याण संभव है तो सहनशीलता तपस्या बन जाती है।संस्कृत तथा भारतीय भाषाओं के वाड्मय में रामकथा से संबंधित असंख्य काव्य लिखे गये, पर उन सबका मूल स्रोत वाल्मीकि रामायण है। यह ग्रन्थ राम के चरित्र का ऐसा लेखा जोखा प्रस्तुत करता है कि इसे इतिहास ग्रन्थ भी माना जाता है।

अयोध्या से चलकर केवल भाई और पत्नी के साथ राम का वनों में भटकना, राष्ट्रीय जीवन की विघटनकारी परिस्थितियों से परिचय प्राप्त करके सम्पूर्ण संसार को राक्षसहीन करने का दृढ़ संकल्प करना, वानर भालुओं की वन्य जातियों के संगठन द्वारा आत्मनिर्भर राष्ट्रसेना का राक्षस संहार के द्वारा लोकमंगलकारी सर्वसुख-वैभव-सम्पन्न आदर्श राम राज्य की स्थापना करना यह सब जिस नाटकीय वैविध्य के साथ रामायण में वर्णित है, वह अनेक अंशों में राष्ट्रीय दृष्टिकोण का परिचायक है। वाल्मीकि ने अपनी कृति रामायण के माध्यम से मानव जाति को यही सन्देश दिया है कि रामायण से पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय जन जीवन को घोर विपतियों से बचाया जा सकता है इस प्रकार शान्ति और समृद्धि के कर्ता धर्ताओं के लिए रामायण मानव संसाधन विकास की मार्गदर्शिका बन सकती है। मानव जाति के लिए रामायण का संदेश बहुमुखी है। वहीं सिनेमा में राम का चित्रण विवादों और बहसों से रहित नहीं रहा है। फिल्म निर्माताओं द्वारा की गई कुछ पुनर्व्याख्याओं और कलात्मक स्वतंत्रताओं ने धार्मिक कथाओं की पवित्रता और रचनात्मक अभिव्यक्ति की सीमाओं के बारे में चर्चा को जन्म दिया है। ऐसे उदाहरण जहां राम के चरित्र को अपरंपरागत या गैर-पारंपरिक व्याख्याओं के अधीन किया गया है, कभी-कभी रूढ़िवादी हलकों से आलोचना की जाती है, जो कलात्मक स्वतंत्रता और धार्मिक भावनाओं के बीच नाजुक संतुलन को उजागर करती है। हाल के वर्षों में, सेंसरशिप के मुद्दे भी सामने आए हैं। निष्कर्षत:,सिनेमा में राम का चित्रण पारंपरिक पुनर्कथन से लेकर समकालीन पुनर्व्याख्या तक फैला हुआ है। फिल्म निर्माताओं ने नैतिकता, धार्मिकता, सामाजिक मुद्दों और पारिवारिक मूल्यों के विषयों का पता लगाने के लिए राम के चरित्र का उपयोग किया है। इन सिनेमाई प्रस्तुतियों का विकास कहानी कहने की गतिशील प्रकृति, सामाजिक मूल्यों और कलात्मक स्वतंत्रता को दर्शाता है,जो सिनेमा के दायरे में हिंदू पौराणिक कथाओं में राम के श्रद्धेय चरित्र पर एक समृद्ध दृष्टिकोण पेश करता है। वहीं हिंदी फिल्म उद्योग के बाहर विभिन्न क्षेत्रीय सिनेमाघरों में भगवान राम का चित्रण गहरा महत्व रखता है, जो अक्सर विविध सांस्कृतिक बारीकियों और व्याख्याओं को दर्शाता है। भगवान राम, हिंदू पौराणिक कथाओं में एक पूजनीय व्यक्ति हैं, उन्हें कई सिनेमाई रूपांतरणों में चित्रित किया गया है, जिनमें से प्रत्येक की अपनी अनूठी कलात्मक प्रतिभा और क्षेत्रीय स्वाद है। जबकि हिंदी सिनेमा ने रामायण की प्रतिष्ठित प्रस्तुतियाँ बनाई हैं, बंगाली और अन्य क्षेत्रीय सिनेमा में सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व की खोज से कहानी कहने, दृष्टिकोण और कलात्मक अभिव्यक्तियों की एक समृद्ध अभिव्यक्ति देखने को मिलती हैं। रामकथा का स्वरूप ही अपने आप में राष्ट्रीय स्तर पर भावनात्मक एकता के विराट् भावजगत् पर प्रतिष्ठित है। रामायण सिर्फ एक कहानी नहीं है बल्कि एक सांस्कृतिक कसौटी है जो कई भारतीयों के साथ गहराई से जुड़ी हुई है। इसकी कथा भारतीय समाज के ताने-बाने में बुनी गई है, नैतिक शिक्षा प्रदान करती है और अपने पात्रों के माध्यम से मानव व्यवहार के आदर्श रूपों को चित्रित करती है। इसके अलावा, महाकाव्य बिना शर्त प्यार, भक्ति और परिवार के महत्व के साथ-साथ अपने दुश्मनों का सम्मान करने और प्रलोभनों से सावधान रहने का पाठ भी सिखाता है। रामायण आधुनिक भारत में राजनीति, धर्म और कला को प्रभावित करती है, और भारतीय संस्कृति के कई पहलुओं में अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। राम के शील में भारत का शील, राम के सौंदर्य मे भारत का सौंदर्य और राम के शौर्य में भारत का शौर्य अपनी चरम पूर्णता के साथ चरितार्थ हुआ है। अतः राम कथा के व्यापक परिवेश में राष्ट्रीयता की सहज अभिव्यक्ति है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. लाइवए. (2024). Ramcharitmanas Chaupai: मंगल भवन अमंगल हारी..यहां जानें रामचरितमानस की सर्वश्रेष्ठ चौपाई. *https://www.abplive.com*. https://www.abplive.com/lifestyle/religion/ayodhya-ram-mandir-know-tulsidas-maharshi-valmiki-ramayan-best-chaupai-with-meaning-2580453
2. डॉ करुणा शर्मा, वाल्मीकि रामायण और रामकिर्ति(रामकियन): एक तुलनात्मक अध्ययन, प्रकाशन - भारतीय राजदूतावास बैंकॉक ISBN- 978-616-423-555-7
3. *Lord Rama in regional Cinema*. (n.d.). TheDailyGuardian. https://thedailyguardian.com/lord-rama-in-regional-cinema/
4. Gopal, L. (1986). *Ramayana Mahabharat mein Shukun Vichar*. http://hdl.handle.net/10603/519441
5. Mishra, S. (2002). *Balmikiya Ramayana or Tulsikrit Ramcharitmanas ke Pramukh Patra ek Manobaigyanik Adhyayan*. http://hdl.handle.net/10603/190877
6. Goswami, S. (2009). *Ramayana ke kathipaya pramug aggyan_eak parichaya*. http://hdl.handle.net/10603/295421
7. Kumar, A. (2016). *Televising the sacred tradition and technology in ramanand sagars ramayana*. http://hdl.handle.net/10603/79879
8. Preeti, Dr. (2023). A review on different versions of Ramayan available today. In *International Journal of Creative Research Thoughts* (Vol. 11, Issue 3, pp. g759–g763) [Journal-article]. https://ijcrt.org/papers/IJCRT2303793.pdf
9. राजपूतक. (2023). आदिपुरुष से पहले रामायण पर 48 फिल्में: 106 साल में दूसरी बार मूंछों वाले राम, गांधीजी की फेवरेट रामराज्य ने.. *Dainik Bhaskar*. https://www.bhaskar.com/entertainment/bollywood/news/adipurush-budget-vs-bollywood-ramayana-movies-prabhas-kriti-sanon-saif-ali-khan-131405537.html?_branch_match_id=1338434663269045295&utm_campaign=131405537&utm_medium=sharing&_branch_referrer=H4sIAAAAAAAAA8soKSkottLXT0nMzMvM1k3Sy8zTD0k3dzJycQ5xdkwCAF2BLt0fAAAA

10. Grng, S. (2024). सिनेमा काे सदा ही भाया प्रेरक श्रीराम का कथानक. dainiktribuneonline.com. https://www.dainiktribuneonline.com/news/lifestyle/cinema-has-always-loved-the-plot-of-the-inspirational-sri-rama/

11. Sharma, R. (2024). Silent films to VFX: The evolution of Ramayan storytelling on screen. *India Today*. https://www.indiatoday.in/showbuzz/story/ramayan-serial-films-hindi-telugu-kannada-silent-films-vfx-adipurush-2491135-2024-01-20

12. Adhikari, A. & Amity School of Communication, Amity university, Uttar Pradesh. (2021). A STUDY ON THE RE-TELECAST OF RAMANAND SAGAR'S RAMAYANA [Journal-article]. *International Journal of Creative Research Thoughts*, *9*(2), 4623–4624. https://ijcrt.org/papers/IJCRT2102556.pdf

13. *Devdutt Pattanaik on portrayal of Lord Ram in films: 'They want to make Ramayan look like Lord of the Rings*. (2024). Latest News, Breaking News, LIVE News, Top News Headlines, Viral Video, Cricket LIVE, Sports, Entertainment, Business, Health, Lifestyle and Utility News | India.Com. https://www.india.com/lifestyle/devdutt-pattanaik-on-portrayal-of-lord-ram-in-films-they-want-to-make-ramayan-look-like-lord-of-the-rings-exclusive-6710165/

14. Wikipedia contributors. (n.d.). *Category:Films based on the Ramayana - Wikipedia*. https://en.wikipedia.org/wiki/Category:Films_based_on_the_Ramayana